ISSN: 2349 - 0217

CARMEL BLAZE

A JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

CARMEL COLLEGE

MALA - 680732

Volume 9 Issue 1 July 2017

Scanned with CamScanner

K. R Meera's *Hangwoman*: Reconstructing History as Her-Story by Breaking Noose 95
Ms. Sabitha M. M.

Identity and Othering: A Dalit Christian Paradigm 102
Sony Augustine

Voice From The Margins Breaks the Strictures of Society: A Critical Study of Bama's *Sangati* 110
Sr. Leena P. Kuriakose

Lifting the Veil and Shattering the Myths: Gender Conflicts in Khaled Hossieni's *A Thousand Splendid Suns* 119
Ms. Susan Joshi

Heard Voices for a Yet Unheard Resolution: A Study of the Oral Autobiography of C.K Janu's *Mother Forest: The Unfinished Story of C.K Janu* 126
Mr. Ummer Ali .M

हिन्दी और विज्ञापन की दुनिया 135
Dr. Shibi C

സിൽവിയ പ്ലാത്ത് - സാഹിത്യത്തിലെ വെള്ളിവെളിച്ചം 142
Dr. Bincy Dominic

Growth and Characterization of Pure and Pumpkin Leave Extract Doped Ammonium Dihydrogen Phosphate (ADP) Crystals 148
Keerthy M. V, Abina Sony, Athulya M, Kavitha M. V

Scanned with CamScanner

हिन्दी और विज्ञापन की दुनिया

Dr. Shibi C
Assistant Professor, Carmel College, Mala

विश्वभर में हिन्दी भाषा का महत्व निरन्तर बढता जा रहा है। हिन्दी पूरे भारतवर्ष की भाषा बन गयी है। राष्ट्रभाषा आदि उपाधियों से भी बढ़कर हिन्दी आज व्यावहारिक जीवन की भाषा बन गयी है। संपूर्ण भारत में हिन्दी ही एकमात्र भाषा है जो विविध जनविभागें को, संस्कृतियों को एकसूत्रता में बाँधती है। हिन्दी का प्रयोग आज जीवन के विविध स्तरों में होता जा रहा है। हिन्दी आज केवल विचार विनिमय की भाषा के स्तर से भी ऊपर उठकर 'जीवन उपयोगी भाषा' बन गयी है। हिन्दी आज बोलचाल की भाषा ही नहीं, बल्कि कार्यालय, विज्ञान, वाणिज्य, व्यवसाय और विज्ञापन का भी भाषा है। इस नयी पहलूओं से गज़रकर हिन्दी भाषा का ढाँचा भी धीरे-धीरे बदलने लगी है। हिन्दी में आज इन प्रयोगों के कारण नयी शब्द, नयी शैली आ गयी है जो ज्यादा दिलचस्पी विषय है। कार्यालयी सन्दर्भ में, विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी सन्दर्भ में हिन्दी में नया-नया परिवर्तन दिनोंदिन होता जा रहा है। व्यापार और वाणिज्य में प्रयुक्त होनेवाली हिन्दी का रूप भी निरन्तर बदलती जा रही है। इस क्षेत्र में विज्ञापनों का योगदान ज़्यादा सराहतीय हैं।

हिन्दी भाषा का प्रचलन करने में विज्ञापनों का महत्वपूर्ण योगदान है। टेलिविज़न और अन्य संचार माध्यमों में निरन्तर हिन्दी विज्ञापन आते हैं। जो अहिन्दी प्रदेशों के सन्दर्भ में भी लागू हैं। हिन्दी विज्ञापनों के द्वारा हिन्दी में जो नये प्रयोग आते हैं, ज़्यादा आकर्षक लगते हैं।

विज्ञापनों में हिन्दी का रूप क्या है और उसका प्रयोग संचार माध्यमों में किस प्रकार होता है जैसी मूद्दों पर ध्यान देना अनिवार्य है। इसके पहले विज्ञापनों की भाषा के बारे में चर्चा करना होगा। 'विज्ञापन वही समर्थ है जो लोगों को उत्पादों की ओर ले जाता है'। रेडियो, टेलिविज़न, समाचार-पत्र और नव

Scanned with CamScanner

ISSN : 0435-1460
UGC Care List No. 25

के.हि.सं. गवेषणा

अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, भाषाशिक्षण तथा साहित्य चिंतन की त्रैमासिक शोध - पत्रिका

अंक-125 : आषाढ़-भाद्रपद, 2078/जुलाई-सितंबर, 2021

हिंदी भाषा
हिंदी साहित्य
हिंदी भाषा विज्ञान
हिंदी भाषा शिक्षण
हिंदी शोध संदर्भ
हिंदी भाषा अनुशीलन
हिंदी साहित्य चिंतन
भाषिक विश्लेषण
भाषिक अनुप्रयोग
साहित्यिक विवेचना
प्रयोजनमूलक हिंदी
हिंदी भाषा शैली
प्रवृत्तिपरक हिंदी
हिंदी भाषा संरचना
हिंदी व्याकरण
हिंदी भाषा व्यवहार
समाज भाषा हिंदी
मीमांसा टीका
भाषिक विमर्श
भाषिक समीक्षा

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

2022/7/

अनुक्रम

प्रधान संपादकीय/ **प्रो. बीना शर्मा** 4

संपादकीय/ **डॉ. सपना गुप्ता** 5–7

सती प्रथा के साहित्यगत साक्ष्य **सूर्यप्रसाद दीक्षित** 8–12

भारतेन्दु युगीन साहित्य का नवजागरण में योगदान **अपराजिता जॉय नंदी** 13–18

हिंदी कविता स्वातंत्र्योत्तर परिप्रेक्ष्य में **मीनू कुमारी** 19–26

साहित्य शोध और आलोचना के अंतरसंबंध **योगेन्द्र प्रताप सिंह** 27–33

आलोचना का सामाजिक दायित्व **अमित कुमार** 34–39

भाषा का समाजशास्त्र **कुसुम कुमारी** 40–45

हिंदी–उर्दू–हिंदुस्तानी : गांधी के विचारों की भाषावैज्ञानिक परख **दिलीप सिंह** 46–62

अवधी का स्वरूपगत विकास **संगीता केशरी** 63–69

भोजपुरी और उसकी उपबोलियाँ : एक परिचय **राजेश चन्द्र आदर्श** 70–85

त्रिपुरा की जनजातीय भाषा कॉकबरक का विकास और लिपि का द्वंद्व **मुनीन्द्र मिश्र** 86–99

वाक्य–विन्यास और शब्दावली: ताते अन–चिन्हार मैं चीन्हा **मनीष कुमार सी. मिश्रा** 100–104

'परिवर्तन' में ध्वनिस्तरीय समतामूलक समांतरता **विजय विनीत** 105–111

भारतेन्दु की भाषा–नीति **श्रीनिवास त्यागी** 112–118

हिंदी और मलयालम के नुक्कड़ नाटक **षिबी चेव्रा** 119–128

साहित्य और संगीत के बीच पुल थे मंगलेश डबराल **रसाल सिंह, पीयूष कुमार** 129–139

रासलीला : पौराणिक और वर्तमान स्वरूप **नृत्य गोपाल** 140–152

हिंदी सिनेमा के परिदृश्य से आदिवासी जीवन का यथार्थ **दीपक कुमार पाण्डेय** 153–158

इस अंक के लेखक

सदस्यता फार्म

लेखकों से निवेदन

अनुक्रम

प्रधान संपादकीय/ **प्रो. बीना शर्मा** 4

संपादकीय/ **डॉ. सपना गुप्ता** 5-7

सती प्रथा के साहित्यगत साक्ष्य **सूर्यप्रसाद दीक्षित** 8-12

भारतेन्दु युगीन साहित्य का नवजागरण में योगदान **अपराजिता जॉय नंदी** 13-18

हिंदी कविता स्वातंत्र्योत्तर परिप्रेक्ष्य में **मीनू कुमारी** 19-26

साहित्य शोध और आलोचना के अंतरसंबंध **योगेन्द्र प्रताप सिंह** 27-33

आलोचना का सामाजिक दायित्व **अमित कुमार** 34-39

भाषा का समाजशास्त्र **कुसुम कुमारी** 40-45

हिंदी-उर्दू-हिंदुस्तानी : गांधी के विचारों की भाषावैज्ञानिक परख **दिलीप सिंह** 46-62

अवधी का स्वरूपगत विकास **संगीता केशरी** 63-69

भोजपुरी और उसकी उपबोलियाँ : एक परिचय **राजेश चन्द्र आदर्श** 70-85

त्रिपुरा की जनजातीय भाषा कॉकबरक का विकास और लिपि का द्वंद्व **मुनीन्द्र मिश्र** 86-99

वाक्य-विन्यास और शब्दावली: ताते अन-चिन्हार मैं चीन्हा **मनीष कुमार सी. मिश्रा** 100-104

'परिवर्तन' में ध्वनिस्तरीय समतामूलक समांतरता **विजय विनीत** 105-111

भारतेन्दु की भाषा-नीति **श्रीनिवास त्यागी** 112-118

हिंदी और मलयालम के नुक्कड नाटक **षिबी चेन्नै** 119-128

साहित्य और संगीत के बीच पुल थे मंगलेश डबराल **रसाल सिंह, पीयूष कुमार** 129-139

रासलीला : पौराणिक और वर्तमान स्वरूप **नृत्य गोपाल** 140-152

हिंदी सिनेमा के परिदृश्य से आदिवासी जीवन का यथार्थ **दीपक कुमार पाण्डेय** 153-158

इस अंक के लेखक

सदस्यता फार्म

लेखकों से निवेदन

हिंदी और मलयालम के नुक्कड नाटक

—डॉ. षिबी चेव्रा

नाटक की कला सामाजिक जीवन को जनतंत्र के आदर्शों के अनुरूप प्रस्तुत करती है। एक देश की जनतंत्र की विराटता को समझने के लिए उस देश के नाटकों पर विचार-विमर्श करना ही काफी होगा। नाटक जीवन को प्रस्तुत करने वाली कला है। नाटक की अहमियत यह है कि उसमें जीवन के विविध परिप्रेक्ष्यों को समेटने की शक्ति मौजूद हैं। दृश्य सुविधा के माध्यम से नाटक अनुभूति का सर्वोत्तम रूप भी धारण कर सकता है। यही अहमियत अन्य साहित्यक रूपों से नाटक को अलग पहचान देती है। नाटक अपनी कागजी रूप को छोड़कर जब मंच में उपस्थित होता है, तब उसमें वाद-विवाद-संवाद करने की क्षमता आ जाती है, जो अन्य साहित्यक रूपों में न के बराबर मौजूद है। यही नाटक का संवेदनात्मक पहलू है। नाटक की इसी संवेदनशीलता ने नाटक को ज्यादा जनप्रिय बना दिया है। नाटक के इसी क्रियात्मक ढाँचे के कारण नाटक ने अन्य विधाओं की तुलना में अग्रणी रूप धारण किया है।

सभी साहित्यक विधाओं के समान नाटक ने भी अपने समसामयिक परिवेश और आग्रह के अनुरूप विकास पाकर विविध रूप धारण कर दिया था। विदेशों में इसका उदय साठ के दशक में 'स्ट्रीट प्ले' के रूप में हुआ था। सोवियत क्रांति के समय मजदूरों द्वारा इसकी प्रस्तुति की गई थी। भारत में स्वतंत्रता के बाद नाटक के क्षेत्र में आये नव काहल के रूप में नुक्कड़ नाटकों ने महत्व पाया था। यह स्वंय नाटक की अनिवार्यता न होकर समय के अनुकूल आयी सामाजिक माँग की उपज माना जाता है। इस सामाजिक माँग के अनुकूल बदलने की प्रक्रिया अनेकानेक परिवर्तनों के बाद ही संभव हो पाया था। भारतीय नाट्य परंपरा की विराट इतिहास से होकर नुक्कड़ नाटक तक आने की विकास यात्रा को खोज निकालना उतना आसान काम नहीं है। नुक्कड़ नाटक अपने सामाजिक परिवेश में आये विविध बदलावों का मूर्त रूप है। सामाजिक बदलाव तथा नए मूल्यों की स्थापना के साथ नई सीमायें बनती हैं, और टूटती भी हैं। नुक्कड़ नाटक के संदर्भ में भी इस बदलाव की निरंतर प्रक्रिया हम देख सकते हैं।

फरवरी : 2022

ISSN 2278 - 6880
UGC Care - List Sr. No. 305

संग्रथन

हिन्दी विद्यापीठ (केरल) तिरुवनन्तपुरम

संग्रथन का संरक्षक मण्डल

आचार्य राजेन्द्र नाथ मेहरोत्रा, 'हिन्दी-विश्व गौरव-ग्रन्थ' शृंखला के प्रणेता एवं प्रकाशक, ग्वालियर (म.प्र.), मो:९४२५११००७७
प्रो.(से.नि.).डॉ.टी.जी.प्रभाशंकर'प्रेमी',विश्वविख्यात हिन्दी साहित्यकार एवं शिक्षाविद्,बंगलूर,मो:९८८०७-८१२७८
श्री विमलकुमार बजाज,प्रखर समाजसेवी,व्यवसायी एवं अध्यक्ष, पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी,शिलॉंग,मेघालय,मो:९४३६१-११८९१
श्री योगेन्द्र कुमार, नोइडा (उ.प्र) डॉ.उमाकुमारी.जे.

सम्पादक मण्डल

प्रोफ़.हिल्डा जोसफ़
डॉ.एम.एस.राधाकृष्ण पिल्लै
डॉ.सी.जे.प्रसन्नकुमारी
डॉ.श्रीलता.के
डॉ. सुमा.एस
प्रोफ़.ए.मीरा साहिब
श्री.के.जनार्दनन नायर
प्रोफ़.एन.सत्यवती
डॉ. सुनिलकुमार.एस
डॉ.सोफ़िया राजन

इस अंक में....

संपादकीय : 'भारत की कोकिला' पंचतत्व में विलीन हुईं।	डॉ.वी.वी.विश्वम्	5-6
मन की बात (जनवरी २०२२)	श्री नरेन्द्र मोदी	7-13
अनुवाद-कला के क्षेत्र में डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर (उज्जयिनी : प्रबंध काव्य के विशेष संदर्भ में)	डॉ.धन्या.वी.	14-15
वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में 'स्वर्णमृग' उपन्यास	डॉ.शबाना हबीब	16-19
परिणति एवं एक और लाल तिकोन	डॉ.प्रदीप	19-21
अनुवाद के क्षेत्र में एण्टन पोपॉविक का योगदान	डॉ.मोहनन.वी.टी.वी.	21-23
पाठकों के पत्र		23
दृष्टिबाधितों के अंधेरे पर रोशनी : 'ब्लाइंड स्ट्रीट'	उमा.पी.टी.	24-26
अखिलेश के कथा-साहित्य में युवा-स्वप्न, संघर्ष और संदर्भ ('चिट्ठी' के विशेष संदर्भ में)	पवन कुमार गर्ग	26-30
स्वयं प्रकाश के 'ईंधन' उपन्यास में सांप्रदायिकता	देवीकृष्णा.पी.	31-33
टेलिविशन और सोशल मीडिया के समय पर समाचार पत्र	डॉ.षिवी चेम्प्रा	33-37
'ज़िन्दगी और गुलाब के फूल' में अजनबीपन	ब्रिजित जोसफ़	38
ओमप्रकाश वाल्मीकि की चुनी हुई कहानियों में शिक्षित दलितों की स्थिति	आर्या.वी.एस.	39-43
साठोत्तरी मलयाळम कहानी और कहानीकार	डॉ.राजेश कुमार.आर	44-48
प्रवासी जीवन एक अवलोकन	डॉ.धन्या.के.एम.	48-50
मञ्आप्पक्की की साइकिल (हाथी पुराण-३)	डॉ.वी.वी.विश्वम	51
तुम बिन जीवन अधूरा मेरा	डॉ.बाबू.जे.	52
भूषण विनु बिराजई	डॉ.लता.डी.	53
प्रश्नोत्तरी	जुगनू	54

मुखचित्र - स्व.लता मंगेशकर

PEER Reviewed & Refereed **JOURNAL**

ISSUE-26 VOLUME-4 IMPACT FACTOR-SJIF-6.586, IIFS-4.125

ISSN-2454-6283 अक्तुबर-दिसंबर, 2021

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

IMPACT FACTOR- IIJIF-7.312 NEW

शोध-ऋतु

4

सम्पादक
डॉ. सुनील जाधव

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव

[illegible]

web:- www.shodhritu.com
Email - [illegible]
WhatsApp 9405384672

2022/7/21 16:27

अनुक्रमणिका

1.कोविड–19 एक चुनौती के रूप में 6
डा0 अलका सक्सेना 6
2.छायावादोत्तर कविता और सामाजिकता बोध 7
डॉ.बिबी चेम्प्रा 7
3.अज्ञेय का प्रकृति–प्रेम और 'एक बूँद सहसा उछली' 9
सुश्री सिमरन 9
4.असमिया से हिन्दी में अनुदित साहित्य (1947 से 2010 तक) : सर्वेक्षण, विश्लेषण और मूल्यांकन 12
डॉ.रघु नाथ यादव 12
5.हरी बिंदी कहानी की मनोवैज्ञानिकता 18
डॉ0 प्रेम प्रकाश शर्मा 18
6.पर्यावरणीय समस्याएं–कारण एवं संभावित समाधान 20
अतुल पाण्डेय 20
7.डॉ.भीमराव आम्बेडेर का सामाजिक चिंतन 23
प्रा. योगराज मनोहर थेर 23
8.सोलह संस्कार 24
प्रा.अनिलकुमार हनुमानदास गुप्ता 24
9.भगत सिंह और पत्रकारिता के राष्ट्रीय परिपेक्ष्य 27
रूद्र प्रताप सिंह 27
10.रीतिकालीन कवयित्रियों की काव्य संवेदना 30
अभिनव 30
11.राहुल सांकृत्यायन के उपन्यास 'बाईसवीं सदी' में बौद्ध दर्शन 34
कालेश्वर कुमार 34
12.कथाकार शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों में सामाजिकता 36
नीलेश यादव 36
13.दलित स्त्री की मुक्ति का प्रश्न और स्वाधीनता आंदोलन 38
डॉक्टर सुधा 38
14.हिन्दी साहित्य विघटित होते मूल्यों के सन्दर्भ में कबीर के व्यक्तित्व का सन्तुलित मूल्यांकन 41
–डॉ0 प्रतिमा सिंह 41
15.इक्कीसवीं सदी में नारी का समाज में योगदान 44
डॉ.मीना शर्मा 44
16.जानाम आड़ाङ आर जेंगेत दाड़े 46
सबाना रहमान 46

2छायावादोत्तर कविता और सामाजिकता बोध

डॉ. षैबी डेन्सा
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग,
कालिकट विश्वविद्यालय, मलपुरम, केरल

समाज व्यक्तियों अथवा परिवारों का मिला–जुला रूप है जिसके जीवन बिताना व्यक्ति केलिए आसान हो जाता है। जिस समाज में हम रहते हैं वहाँ के क्रियाओं और प्रघटनाओं का असर हमारे ऊपर होना स्वाभाविक है। समाज में व्यक्तियों के बीच विविध प्रकार के संबन्ध होना भी अनिवार्य है। सामाजिक प्राणी के रूप में व्यक्ति हर सामाजिक घटना से प्रभावित होते हैं। सामाजिक जीवन से व्यक्ति चिर परिचित हैं। इस सामाजिक संवेदना को जब साहित्य में लाने की कोशिश होती है तब साहित्य महत्वपूर्ण बन जाता है।

साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज के विविध पहलुओं को प्रस्तुत करने का कार्यभार ले लेते हैं। विविध सामाजिक मुद्दों को प्रस्तुत करने का हिम्मत साहित्यकारों में हैं। आजकल समाज में व्याप्त आशा–निराशा, सुख–दुःख, उत्साह–हताशा को मात्र व्यक्त करके साहित्यकार केवल अपनी सीमा का निर्धारण नहीं कर पाते हैं, बल्कि समकालिन गंभीर समस्याओं के प्रति स्वंय को जागरूक करना भी वे जानते हैं। इसी वजह से आज के साहित्य और भी श्रेष्ठ बनता जा रहे हैं। हिन्दी साहित्य के सन्दर्भ में कविताओं की इसमें अहम भूमिका हैं। विशेषकर छायावादोत्तर कविता का स्वर विविध सामाजिक समस्याओं पर निर्भर है। छायावादोत्तर कविताओं की समष्टि प्रधान चेतना महत्वपूर्ण बात हैं। इस समय के कवि विषयों पर विविधता लाते हुए उसके प्रति अपना सहज और स्वाभाविक प्रतिक्रिया को सामाजिक चेतना के बलबूते पर व्यक्त कर रहे हैं। छायावादोत्तर काल में रहनेवाले आज के कवि के पास सामाजिक यथार्थ को देखने का एक विशेष तरीका होता हैं, जिससे उद्भूत कविता असल में जीवन का सटीक चित्रण प्रस्तुत करनेवाली कविता है। विविध परिवेश में बात करनेवाली छायावादोतर कविता अपनी विविध उद्देश्यों के बीचोंबीच में भी सामाजिक उत्तरदायित्व को निभानेवाली कविता हैं। कविता में जीवन के कई चित्र उपलब्ध रहती हैं। कवि समाज के प्रति अपनी पूर्ण निष्ठा के साथ लिख रहे हैं। समाज और विविध मानवीय विसंगतियों के आधार पर लिखी गयी कुछ कविताओं पर ध्यान देना अनिवार्य हैं।

नागार्जुन की कविता सब प्रकार के लोगों केलिए हैं।कालिदास' नामक कविता में आप ने कविताओं की रचना प्रकिया पर प्रकाश डाला है। नागार्जुन का मानना है कि कविता कवि के जीवन को गहरे तक प्रभावित करती हैं।कविता का सुख और दुख कवि का अपना सुख–दुख हैं। कवि अपनी पीड़ा का ही चित्रण करते हैं।नागार्जुन कालिदास से पूछते हैं,"कालिदास सच सच बतलाना/इंदुमती के मृत्यु शोक से/अज रोया या/तुम रोए थे?"कहने का मतलब यह है कि रघुकुल के महाराज अज अपनी पत्नी के मृत्युशोक में विलाप कर रहा है। वास्तव में वह अज का विलाप था या फिर उसके दुख को स्वंय ही अपने भीतर धारण कर लिया था ? कवि के लिए दूसरे का दुःख भी स्वंय का दुःख बन गया हैं। केदारनाथ अग्रबाल ने मार्क्सवादी दर्शन को जीवन का आधार मानकर जनसाधारण के जीवन की गहरी व व्यापक संवेदना को अपनी कविताओं में मुखरित की हैं।"जो जीवन की धूल चाट कर बड़ा हुआ है/तूफानों से लड़ा और फिर खड़ा हुआ है/जिसने सोने को खोदा लोहा मोड़ा है/जो रवि के रथ का घोड़ा है/वह जन मारे नहीं मरेगा/नहीं मरेगा/जो जीवन की आग जला कर आग बना है/फौलादी पंजे फैलाए नाग बना है/जिसने शोषण को तोड़ा शासन मोड़ा है/जो युग के रथ का घोड़ा है/वह जन मारे नहीं मरेगा/नहीं मरेगा।"

"वह जन मारे नहीं मरेगा" कविता में कवि को आम जनता की शक्ति पर अटूट विश्वास है।कितने भी भारी कष्ट झेलना पड़े ये लोग पीछे हटेगा नहीं।इस कविता में 'नहीं मरेगा' की आवृत्ति जनता में उनकी दृढ़ एवं गहरी आस्था को प्रदर्शित करता है। जनता में ऐसा दृढ़ विश्वास मार्क्सवाद जैसी वैज्ञानिक विचारधारा से प्रभावित कवि ही व्यक्त कर सकता है।आम आदमी जीवन की धूल चाट कर ही बड़ा हुआ है और तूफान को हराकर खड़े हुआ है तो उनसे मोल लेना ऊतना आसान काम नहीं है।

नदी के द्वीप कविता में अज्ञेयजी ने अपने सामाजिक बोध को व्यक्त किये हैं।"माँ है वह! है, इसी से हम बने हैं।/किंतु हम हैं द्वीप। हम धारा नहीं हैं।/स्थिर समर्पण है हमारा। हम सदा से द्वीप हैं स्रोतस्विनी के।/किंतु हम बहते नहीं हैं। क्योंकि बहना रेत होना है।/हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं। पैर उखड़ेंगे। प्लवन होगा। ढहेंगे। सहेंगे। बह जाएँगे।"कवि का कथन है कि हम सब नदी के द्वीप समान हैं। जिस प्रकार द्वीप नदी के द्वारा बनायी गयी है उसी प्रकार जीवनरुपी नदी का बहाव के कारण हमारा व्यक्तित्व बनता है। नदी के बिना हमारा अपना कोई अस्तित्व नहीं हैं। कहने का अर्थ है कि समाज ही व्यक्ति का

PEER Reviewed & Refereed **JOURNAL**

ISSUE-26 VOLUME-2 IMPACT FACTOR-SJIF-6.586, IIFS-4.125

ISSN-2454-6283 अक्तुबर–दिसंबर, 2021

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

IMPACT FACTOR- IIJIF-7.312 NEW

शोध-ऋतु

2

सम्पादक
डॉ. सुनील जाधव

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव

पत्राचार हेतु कार्यालयीन पता -
डॉ.सुनील जाधव,
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,
हनुमान गड कमान के सामने,
नांदेड-४३१६०५, महाराष्ट्र

web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@[illegible]
WhatsApp 9405384672

2022/7/

अनुक्रमणिका

1.बच्चन के लोक गीत–*डॉ.संगीता वर्मा*.......5
2.डॉ.शिव मंगल सिंह'सुमन' के काव्य में बिम्ब विधान–*डॉ.पीयूष रंजन तिवारी*.......8
3.हिन्दी ग़ज़ल : युगीन यथार्थ का चित्रण–*संजू सिंह*.......9
4.वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में बौद्ध शिक्षा की प्रासंगिकता–*डॉ.रुक्मिणी चौधरी*.......12
5.हिंदी लघु कथाओं में व्यक्त पारिवारिक चिंतन–*प्रा.डॉ.कल्पना राजेंद्र पाटील*.......15
6.हिंदी नाटक एवं रंगमंच–*नदीम अहमद*.......17
7.इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कहानियों में बालजनसंघर्ष : एक विश्लेषण–*अनुमोल कृष्णन*.......19
8.महात्मा गाँधी : ग्राम स्वराज तथा पंचायती राज–*[1]डॉ.राजेश मौर्य, [2]प्रो0जे0पी0मित्तल*.......21
9.वैदिक कालीन शिक्षा एवं बौद्ध कालीन शिक्षा में तुलनात्मक अध्ययन–*दिग्विजय सिंह*.......25
10.प्राच्य भारतीय ग्रंथों में उद्योग : एक ऐतिहासिक विवेचन–*डॉ0 आशुतोष*.......27
11.असफल विकास मॉडल और आदिवासी पीड़ा संदर्भः महुआ माझी कृत उपन्यास मरंग गोडा नीलकंठ हुआ–*रमेश कुमार*,.......30
12.पगहा जोरी–जोरी रे घाटो कहानी संग्रह में स्त्री प्रतिकार के स्वर–*दीपिका कुमारी*.......33
13.निरक्षरता को कम करने में पुस्तकालय का योगदान–*एकता कुमारी*.......36
14.भारत एवं बाल अपराध भारतीय समाज–प्रा. अनिलकुमार हनुमानदास गुप्ता.......38
15.महात्मा फुले के दृष्टिकोण में शिक्षा–*प्रा.योगराज मनोहर थेर*.......40
16.History of Nature Poetry-*Hemlata Kumari*.......42
17.जी.शंकर कुरुप मलयालम के चिरंजीवी भावगीतकार–*डॉ.बिनु डी*.......45
18.'Establishment And Management Of Naval During Shivaji Maharaj's Period'-*Dr. Vishwanath Kashinath Sonwane*.......48
19.कोविड–19 भारतीय पर्यटनासमोरील उपाय योजनाः एक अध्ययन–*डॉ.स्वामी विरभद्र गुरप्पा*.......52
20.मित्रता का अंतरंग भूगोल (मुक्तिबोध के नाम सम्बोधित पत्रों के बहाने)–*आशीष कुमार वर्मा*.......55
21.ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं में दलित जीवन के विविध आयाम–*सोनिका*.......60
22.नुक्कड़ नाटक और समकालीनता की अवधारणा–*डॉ.पिवी चॅब्रा*.......63
23.धर्मसत्ता और भक्ति कविता–*श्रीनिवास त्यागी*.......66
24.महिला सुरक्षा एवं सम्मान : कल आज और कल–*डा.सुनील कुमार*.......69
25.सांस्कृतिक परिवर्तन के संदर्भ और हिंदी कहानी –*डॉ.नागेश्वर राव दण्डिमोट्ला*.......71
26.पर्यावरण पर तीर्थाटन का प्रभाव : ओडिशा परिक्षेत्र के तीर्थस्थल पुरी का विशेष अध्ययन–*डा.प्रेम प्रकाश राजपूत*,.......74
27.'ठाकुर का कुआँ' कहानी में दलित एवं स्त्रियों का शोषण–*डॉ.सुनील गुलाबसिंग जाधव*.......77
28.स्त्री के प्रति कवि नागार्जुन का दृष्टिकोण–*डॉसुषमा कुमारी*.......79
29.परिवार व समाज में वृद्धों का स्थान और प्रेमचंद की कहानियाँ –*प्रो. वीरेंद्र सिंह कश्यप*.......81
30.ईशावास्योपनिषद् सम्मत आचार–मीमांसा–*मंजीत कुमारी*.......85

तियाँ और आर्यों द्वारा भारत के मूल निवासियों को राक्षस–असुर हकर उन्हें नकारात्मक भूमिका में रखकर उनके हक और हकूक को थेया लेना और अपमानित करने की सोची–समझी घटिया जालसाजी खिलाफ, शूद्रों के शोषण के खिलाफ अस्वीकार की एक लंबी श्रृंखला । ओमप्रकाश वाल्मीकि ही अपनी आत्मकथा में लिखते हैं कि वक्त दला है लेकिन कहीं कुछ है जो सहज नहीं होने देता। इस असहजता दौर में भी ओमप्रकाश वाल्मीकि जैसे रचनाकार दलित साहित्य को रंतर आगे बढ़ा रहे हैं। उस सुबह की ओर बढ़ रहे हैं जिसमें समाज हर तबके को एक ही चश्मे से न देखा जाएगा। बढ़ते बढ़ते दलित माज के उस वर्ग का साहित्य भी लिखा जाएगा जो आज सम्मान ी जिंदगी जी रहा है भले ही यह सम्मान लाख कोशिशों के बाद मेला हो। इस संदर्भ में बर्तोल्त ब्रेख्त की ये पंक्तिया उलेखनीय है– क्या जुल्मतों के दौर में भी गीत गाए जाएंगे? हाँ! जुल्मतों के दौर के ी गीत गाए जाएंगे'।

संदर्भ सूची–1–ओमप्रकाश वाल्मीकि, अब और नहीं, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 22 2–ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2015 पृष्ठ संख्या 57 3–संपादक– कंवल भारती, दलित– निर्वाचित कविताएँ, इतिहासबोध प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2006 पृष्ठ संख्या 724–संपादक– डॉ राम चन्द्र, डॉ प्रवीण कुमार, दलित चेतना की कविताएँ, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2014 पृष्ठ संख्या 235–संपादक– कंवल भारती, दलित– निर्वाचित कविताएँ, इतिहासबोध प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2006 पृष्ठ संख्या 107 6–संपादक– डॉ राम चन्द्र, डॉ. प्रवीण कुमार, दलित चेतना की कविताएँ, स्वराज प्रकाशन, संस्करण 2014 नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 22 7–ओमप्रकाश वाल्मीकि, सदियों का संताप, फिलहाल प्रकाशन, देहरादून, 1989 पृष्ठ संख्या 13 8–संपादक– कंवल भारती, दलित– निर्वाचित कविताएँ, इतिहासबोध प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 2006 पृष्ठ संख्या 659–ओमप्रकाश वाल्मीकि, जूठन (पहला खंड), राधाकृष्ण पपेरबैक्स, संस्करण 2015 पृष्ठ संख्या 8 10–संपादक– कंवल भारती, दलित– निर्वाचित कविताएँ, इतिहासबोध प्रकाशन, संस्करण 2006 पृष्ठ संख्या 6611–ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2015 पृष्ठ संख्या 31 12–संपादक– कंवल भारती, दलित– निर्वाचित कविताएँ, इतिहासबोध प्रकाशन, संस्करण 2006 पृष्ठ संख्या 56 13–वही, पृष्ठ संख्या 6014–वही, पृष्ठ संख्या 5915–http:èèkavitkaosh.org16–ज्योतिराव गोविंदराव फुले, गुलामगिरी, अनुवाद डॉ. विमलकीर्ति, सम्यक प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2005 पृष्ठ संख्या 3 17–ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2015 पृष्ठ संख्या 90

22.नुक्कड़ नाटक और समकालीनता की अवधारणा

–डॉ.षिबी चेंब्रा
सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग, कालिकट विश्वविद्यालय, मलपुरम केरल

साहित्य समाज से संबन्ध रखता है। समाज की गतिविधियों को साहित्यकार अपनी वैयक्तिक अनुभवों के माध्यम से जनसाधारण से साझा करते हैं। साहित्य विभिन्न परिवेश से उपजकर समाज का दिशा–निर्देश करके अपने को सार्थक बना देते हैं। साहित्य अपने समय को पहले पहचानते हैं और उसके मुताबिक परत दर परत उसका चित्रण करते हैं। समय से कितनी गहराई से जुडे रहते हैं,उतनी तीक्षणता साहित्य में मौजूद रहती है। समय से जुड़ने की प्रक्रिया को समकालीनता शब्द से मुखरित किया गया है। साहित्य को पहला समकालीन होना पड़ता है। कालजयी बनने की प्रक्रिया बाद ही बनती है।

समकालीन शब्द के लिए अंग्रेज़ी में 'कन्टेम्पोररी (contemporary) शब्द का प्रयोग किया गया है। समकालीन शब्द एक विशेष कालगणना का परिचायक है। इसका अर्थ होगा – अपने समय का। बीते हुए समय और आनेवाले समय , दोनों को आत्मसात करके समग्र युगबोध को प्रस्तुत करना समकालीन बनने की प्रवृत्ति को दर्शाता है। समकालीन में वर्तमान बोध के साथ ही अतीत और भविष्य का विवेक सम्मत बोध होता है। समकालीनता में विशिष्ट वर्तमान बोध की उपस्थिति रहता है। अपने समय के प्रति ईमानदार होने या सजग होने की प्रवृत्ति ही समकालीनता का मूल आधार है। समकालीन दृष्टिकोण रखकर ही अपने समय के यथार्थ को समझने की और उसकी अनीतियों पर आवाज़ बुलंद करने की क्षमता साहित्यकार को होती है।

समकालीनता की परिभाषा–समकालीन का अर्थ है ' समसामयिक ' या एक ही समय में रहनेवाले या होनेवाले। समकालीन शब्द अपने आप सीमित नहीं है। समय के साथ हाथ मिलाते हुए वह आगे की ओर अग्रसर है। विश्वभरनाथ उपाध्याय के अनुसार "अपने काल की समस्याओं और चुनौतियों में केन्द्रीय महत्व रखनेवाली समस्याओं की समझ "[1] ही समकालीनता है। विजेन्द्र के अनुसार "समकालीनता का अर्थ भौतिक रूप से जो घटित हो रहा है मात्र उतना नहीं है बल्कि जो कुछ क्षतिग्रस्त है उनकी पुर्नरचना की सृजनशील चेष्टायें और जीवन को समोन्नत तथा सुन्दर एंव मनोहारी बनाने की परिकल्पना ही उसी समकालीनता का एक महत्वपूर्ण पक्ष है।"[2] उक्त परिभाषाओं से यह ज्ञान होता है कि अपने समय को भौतिक रूप मै समझने से मात्र कोई व्यक्ति या साहित्यकार समकालीन नहीं बन पायेंगें। समय